E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2020; 2(2): 129-133
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 03-05-2020
Accepted: 09-06-2020

डॉ. गणेशा राम
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री प्राज्ञ महाविद्यालय बिजयनगर, अजमेर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. गणेशा राम
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री प्राज्ञ महाविद्यालय बिजयनगर, अजमेर, राजस्थान, भारत

भारत की विदेश नीतिः 21वीं शताब्दी में बदलते वैश्विक परिदृश्य में परिवर्तन की ओर अग्रसर

डॉ. गणेशा राम

सारांश
21वीं शताब्दी में बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति में काफी परिवर्तन हुआ है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के अंतिम कार्यकाल से लेकर डॉ. मनमोहन सिंह तथा वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तक भारत की विदेश नीति काफी परिवर्तन के दौर से गुजरी है। वर्तमान भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा करते हुए बेझिझक निर्णय लेती है। अब विश्व पटल पर भारत एक आर्थिक और सैनिक दृष्टि से उभरती हुई महाशक्ति के रूप में दिखाई पड़ता है। वर्तमान में वैश्विक संदर्भ में कोई भी निर्णय हो तो उसमें भारत की भागीदारी अपना महत्वपूर्ण योगदान रखती है। वर्तमान में भारत अपनी विदेश नीति के संबंध में महत्वपूर्ण कठोर निर्णय लेने में कोई संकोच नहीं करता है। भारत वर्तमान में अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए अब अधिक स्पष्ट एवं आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है तथा विश्व पटल पर अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ या अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, इन सभी में भारत की विदेश नीति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वर्तमान भारतीय विदेश नीति भारत को विश्व गुरु का दर्जा वापस दिलाने करने की तरफ पूरी मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है।

मूल शब्दः भारतीय विदेश नीति, 21वीं शताब्दी, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, परिवर्तन, इत्यादि।

प्रस्तावना
भारत की विदेश नीति की झलक संविधान के अनुच्छेद 51 के अन्तर्गत मिलती है जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि पर आधारित है। भारतीय विदेश नीति का प्रारंभ नेहरू युग से होता है। नेहरू ही विदेश नीति के निर्माता और मूल निर्धारक थे। 21वीं शताब्दी के विगत कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। वर्ष 2020 में दिल्ली में आयोजित रायसीना डायलॉग में भारत के विदेश सचिव ने कहा था कि ''भारत गुटनिरपेक्षता के अतीत से बाहर निकल चुका है और आज अपने हितों को देखते हुए दुनिया के अन्य देशों के साथ रिश्ते बना रहा है।'' ध्यातव्य है कि वर्तमान में भारत, विश्व के लगभग सभी मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है और अधिकांश बहुपक्षीय संस्थानों में उसकी स्थिति मजबूत हो रही है।

विदेश नीति का अर्थ
विदेश नीति राष्ट्रीय हितों, सिद्धांतों एवं उद्देश्यों का एक जोड़ है। एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र के साथ संबंध स्थापित करने, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने एवं युद्ध तथा शांति के प्रश्नों में अपनी भूमिका के लिए जो कार्यक्रम और नीतियां अपनाई जाती है यही उस राष्ट्र की विदेश नीति कहलाती है। प्रत्येक देश अन्य देशों के साथ अपने संबंधों को संचालित करने हेतु विदेश नीति का प्रतिपादन करता है, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है ताकि वह अन्य देशों के व्यवहार में बदलाव ला सके, उसे प्रभावित कर अपने नीतिगत उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। [1]

भारत की विदेश नीति
पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति के बारे में एक प्रेस सम्मेलन सितंबर, 1946 में कहा था कि – ''वैदेशिक संबंधों के क्षेत्र में भारत एक स्वतंत्र नीति का अनुसरण करेगा और गुटों की खींचतान से दूर रहते हुए संसार के समस्त पराधीन देशों को आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान कराने तथा जातीय भेदभाव की नीति का दृढ़तापूर्वक उन्मूलन कराने का प्रयत्न करेगा, साथ ही वह दनिया के शांतिप्रिय राष्ट्रों के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना के प्रसार के लिए भी निरंतर प्रयत्नशील होगा। [2] भारत की विदेश नीति अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को बढ़ावा देने के साथ राष्ट्रीय हितों में अभिवृद्धि के लिए विश्व के अन्य देशों के साथ भारत के संबंधों का नियमन करती है।

यह विभिन्न कारकों द्वारा निर्धारित होती है, जैसे– भौगोलिक परिस्थिति, इतिहास और परंपरा, सामाजिक बनावट, राजनीतिक संगठन, राष्ट्रीय नेतृत्व की दृढ़ इच्छाशक्ति, अंतरराष्ट्रीय स्थिति, आर्थिक स्थिति, घरेलू परिस्थितियाँ, सैन्य शक्ति, सरकार की संरचना और जनमत आदि। [3].

भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत

भारतीय विदेश नीति निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है[4]–

1. अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को बढ़ावा देना
2. पंचशील
3. गुटनिरपेक्षता
4. निःशस्त्रीकरण
5. संयुक्त राष्ट्र संघ को सहयोग
6. उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध
7. संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विश्व शांति के लिए समर्थन
8. नस्लवाद व आतंकवाद का विरोध
9. राजनीतिक व सांस्कृतिक कूटनीति तथा आर्थिक विकास
10. भारत का वैश्विक शक्ति संतुलन में उभरती हुई शक्ति के रूप में उदय
11. अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं व संगठनों में भागीदारी तथा उनके साथ मैत्रीपूर्ण संबंध।

भारत की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य

भारत की विदेश नीति के निम्नलिखित उद्देश्य है[5]–

- किसी भी अन्य देश के समान ही भारत की विदेश नीति का मुख्य और प्राथमिक उद्देश्य अपने 'राष्ट्रीय हितों' की रखा करना एवं तीव्र परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर नजर रखना, जिससे कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ कदम से कदम मिलाकर चला जा सके।
- परस्पर लाभकारी सहयोग के आधार पर पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बढ़ाना (पहले पड़ोस की नीति) एवं उन्हें सुदृढ़ करना तथा एक–दूसरे को सहयोग पहुँचाने की भावना से कार्य करना।
- आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक अभियान को सहयोग व समर्थन देना, सीमापार आतंकवाद को समाप्त करना तथा पाकिस्तान में कार्यरत आतंकवादी ढांचे को समाप्त करना।
- भारत के तीव्र आर्थिक विकास एवं वैश्विक निवेश को बढ़ाने वाले अंतर्राष्ट्रीय माहौल को विकसित करना, देश में विज्ञान एवं तकनीकी तथा प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने वाले अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को संपन्न करना।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और पुनर्गठन के साथ भारत की स्थायी सदस्यता प्राप्त करना तथा वैश्विक व्यवस्था में बहुध्रुवीय कल्पना करना जो संप्रभुता और अहस्तक्षेप के सिद्धांतों का पालन करे।
- भारत द्वारा 'लुक ईस्ट' नीति के स्थान पर 'एक्ट ईस्ट' नीति को अपनाकर आसियान के साथ संबंधों को और अधिक मजबूत करना।
- अपनी स्वतंत्र विदेश नीति की स्वायत्तता को बनाए रखना तथा स्थायी, समृद्ध एवं सुरक्षित वैश्विक मानदंडों की स्थापना में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करना।
- पी–5 समूह के देशों के साथ घनिष्ठता से कार्य करना तथा विश्व की महाशक्तियों, यथा– अमेरिका, रूस, यूरोपीय सघ, जापान, फ्रांस, जर्मनी एवं चीन आदि के साथ सामरिक समझौते करना।
- विदेश में रह रहे प्रवासी भारतीयों को जोड़ना तथा उनके हितों की रखा करना।
- खाड़ी क्षेत्र के देशों के साथ सहयोग करना, जो तेल और गैस आपूर्ति के मुख्य स्त्रोत हैं तथा जहाँ लगभग 5 मिलियन भारतीय रह रहे हैं, के साथ आर्थिक सहयोग बढ़ाना।
- विकसित एवं विकासशील देशों में समान आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकारों को बढ़ावा देना।
- क्षेत्रीय संगठनों, जैसे– सार्क, ब्रिक्स, बिम्सटेक, आईबीएसए, आइओआर–एआरसी, मैकांग–गंगा सहयोग, जी–20, जी–7 तथा यूरोपीय संघ के साथ सहयोगपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देना।
- वैश्विक जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद की समाप्ति तथा नाभिकीय निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करना तथा इसके लिए निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध ढंग से प्राप्त करना।
- तीव्र गति से आर्थिक विकास के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ाने के साथ–साथ आर्थिक सहायता प्राप्त करना एवं सांस्कृतिक कूटनीति के द्वारा अन्य देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना।
- भारतीय डायस्पोरा के साथ सतत् बेहतर संबंधों को मजबूती प्रदान करने तथा भारत के अंतर्राट्रीय संबंधों में इनकी भूमिका को मान्यता प्रदान करने के साथ ही भारत में बड़ी मात्रा में निवेश आकर्षित करने का प्रयास करना जिससे 'मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटीज, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, क्लीन इंडिया आदि को सफल बनाया जा सके।

नए युग में भारत की विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ

- भारत किसी विशेष देश के विरुद्ध किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने का समर्थन नहीं करता है जब तक कि वे प्रतिबंध अंतर्राष्ट्रीय सर्वसम्मति के साथ न अधिरोपित किया जाए। ध्यातव्य है कि भारत ऐसे शांति सैन्य अभियानों में ही हिस्सा लेता है जिनमें संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना पर बल, शामिल हों।
- भारत अन्य देशों के आतंरिक मामलों में दखलअंदाजी करने में विश्वास नहीं रखता, परंतु यदि कोई देश अनजाने में या जानबूझकर भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करता है तो भारत बिना समय बर्बाद किए हस्तक्षेप करने में नहीं झिझकेगा।
- भारत आक्रामकता के स्थान पर निर्माणात्मकता पर जोर देता है। भारत का मानना है कि युद्ध समस्या का हल नहीं बल्कि एक नई समस्या की शुरूआत होता है परंतु धैर्य की नीति को भातर की कमजोरी नहीं माना जा सकता।
- भारत की वर्तमान विदेश नीति की सबसे खास विशेषता यह है कि इसमें पूर्व की नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति सबसे अधिक है। भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक विदेश नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक विदेश नीति की ओर अग्रसर हो रहा है।
- वर्ष 2016 में उरी आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक और वर्ष 2019 में पुलवामा हमले के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक तथा वर्ष 2017 में डोकलाम में भारत की चीन के खिलाफ कार्रवाई, तथा हाल ही में लद्दाख में चीन के खिलाफ कार्रवाई भारतीय विदेश नीति के आक्रामक और सख्त होने के प्रमुख उदाहरण हैं।
- बदलते वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है।
- भारत ने अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया है और अमेरिका तथा रूस के साथ भारत के संबंध इस तथ्य के प्रमुख उदाहरण हैं।

21वीं शताब्दी में भारत की विदेश नीति में परिवर्तन

भारत की विदेश नीति के 21वीं शताब्दी में एक नए युग में प्रवेश करने के साथ ही बदलाव दिखाई पड़ता है। पिछले दो दशकों के दौरान भारतीय विदेश नीति में काफी परिवर्तन हुआ है। दशकों पुरानी सुरक्षात्मक विदेश नीति के स्थान पर अब अधिक स्पष्ट एवं आक्रामक, संतुलित तथा विश्व पटल पर उभरती हुई महाशक्ति की नीति के रूप में दृष्टिगोचर होती है। नई सदी में भारत की विदेश नीति को समझने के लिए इसे तीन चरणों में विभाजित करते हैं– प्रथम चरण – श्री अटल बिहारी वाजपेयी सरकार की भारतीय विदेश नीति, द्वितीय चरण – डॉ. मनमोहन सिंह सरकार की भारतीय विदेश नीति तथा तृतीय चरण – श्री नरेंद्र मोदी सरकार की वर्तमान में भारतीय विदेश नीति।

प्रथम चरणः श्री अटल बिहारी वाजपेयी सरकार की भारतीय विदेश नीति (1998–2004)

सितंबर–अक्टूबर, 1999 में हुए आम चुनाव के बाद भारत में राष्ट्रीय जनजांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की सरकार बनी, जिसमें बड़ी पाटी के रूप में भारतीय जनता पार्टी मुख्य राजनीतिक दल के रूप में तथा इसके नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल के दौरान विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण योगदान भारत को परमाणु संपन शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में बनाने में था। उनके नेतृत्व में 11 मई तथा 13 मई, 1998 के द्वारा पोकरण–्प परमाणु परीक्षण किया। उसके बाद भारत पर अमेरिका तथा अन्य देशों ने कई प्रकार से आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए थे जिसके कारण उस समय भारत अलग–थलग पड़ गया था। भारत ने इस परमाणु परीक्षण का उद्देश्य निर्धारित करते हुए कहा कि यह न्यूनतम परमाणु प्रतिरोधक क्षमता के विकास के लिए है। अतः भारत का यह परमाणु परीक्षण वर्ष 1974 के परमाणु परीक्षण से भिन्न था, कि इसने परमाणु हथियारों के विकास का लक्ष्य निर्धारित किया क्योंकि पाकिस्तान ने चीन की सहायता से परमाणु हथियारों का विकास कर लिया था। विचारकों के अनुसार, भारत ने एक महाशक्ति के दर्जे का दावा प्रस्तुत किया क्योंकि परमाणु परीक्षण के साथ भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का दावा भी प्रस्तुत कर दिया। अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में पाकिस्तान के साथ संबंधों को मधुर बनाने के लिए 'लाहौर घोषणा–पत्र (1999)' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। वर्ष 2000 में 'भारत एवं अमेरिका संबंध 21वीं शताब्दी के दृष्टिकोण का घोषणा–पत्र नामक समझौते पर हस्ताक्षर किए। सितंबर, 2000 में अटल जी ने अमेरिका की यात्रा की तथा वे कांग्रेस की 106वीं संयुक्त बैठक को संबोधित करने वाले पहले प्रधानमंत्री तथा एकमात्र विदेशी नेता बन गए। वाजपेयी कार्यकाल के दौरान वर्ष 2000 में रूसी राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा के दौरान भारत और रूस के मध्य रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। सितंबर, 2001 के बाद भारतीय विदेश नीति में "आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध" में अमेरिका का सहयोग करने का निर्णय लिया गया। भारत ने पूरी दुनिया को यह बताने का प्रयत्न किया वह विगत दो दशकों से सीमापार आतंकवाद से प्रभावित है इसलिए भारतीय विदेश नीति में आतंकवाद एक बड़ा मुद्दा बनकर उभरा।[6] अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने 2001 में भारत के ऊपर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंध हटा दिए। अटल जी की विदेश नीति के अंतर्गत 21वीं सदी की शुरुआत में भारत तथा पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध, यूरोपियन संघ एवं फ्रांस, जर्मनी, इटली, ब्रिटेन व कई अन्य यूरोपियन देशों के साथ आर्थिक और सामाजिक तथा सामरिक समझौते हुए। इसी प्रकार पश्चिमी एशिया तथा अफ्रीकन देशों के साथ कई महत्वपूर्ण समझौते हुए जिसके द्वारा भारत विश्व स्तर पर एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के साथ–साथ दुनिया का सबसे विशाल लोकतंत्र होने के कारण अग्रणी पंक्ति के देशों में खड़ा हो गया। इसी कारण भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के अनेक मंचों में भागीदारी की तथा इसके पुनर्गठन की वकालत की। भारत के इस आह्वान का संयुक्त संघ के अनेक प्रतिनिधियों ने समर्थन किया। अनेक राष्ट्र इस बात पर भी सहमत दिखे कि भारत के आकार, लोकतंत्र के प्रति इसके बेदाग रिकॉर्ड, मजबूत आर्थिक संभावनाओं तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति कार्यों में योगदान को देखते हुए भारत सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने के लिए उपयुक्त है।[7].

अटल जी के नेतृत्व में बाली में वर्ष 2003 में भारत–आसियान शिखर सम्मेलन में आसियान देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध तथा मुक्त व्यापार समझौता लागू होने के बाद व्यापारिक संबंधों को और अधिक मजबूत करने पर सहमति बनी। भारतीय डायस्पोरा को साथ लेकर चलने के लिए प्रवासी भारतीय सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में प्रधानमंत्री की घोषणा के अनुसार दिसंबर, 2003 में 16 देशों के भारतीय मूल के लोगों को दोहरी नागरिकता प्रदान करने का विधेयक संसद से पारित करके प्रवासी भारतीय मूल के लोगों को राहत प्रदान की। इस्लामाबाद में 4–6 जनवरी, 2004 को आयोजित 12वें सार्क शिखर सम्मेलन में दक्षिणी एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) से सम्बद्ध एक करार संपन्न हुआ। इसी दौरान भारत का वर्ष 2004–06 अवधि के लिए संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद का सदस्य के रूप में चयन हुआ।[8].

द्वितीय चरणः डॉ. मनमोहन सिंह सरकार की भारतीय विदेश नीति (2004–2014)

वर्ष 2004 में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यू.पी.ए. की सरकार बनी तथा इस सरकार ने भी एन.डी.ए. सरकार की विदेश नीति को ही आगे बढ़ाया। इस सरकार की विदेश नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि के रूप में भारत तथा अमेरिका के मध्य सिविल परमाणु समझौता है। वर्ष 2001 के उपरांत भारत एवं अमेरिका के मध्य संबंध तेजी से आगे बढ़े और इसी क्रम में वर्ष 2005 में भारत और अमेरिका के मध्य "सिविल परमाणु समझौता" हुआ जो भारत और अमेरिका के मध्य बढ़ते सामरिक संबंधों का परिणाम था। इस समझौते से भारत को समूचे विश्व में उत्तरदायी राष्ट्र का दर्जा प्राप्त हो गया और भारत विश्व का एक मात्र ऐसा देश है जिसने परमाणु अप्रसार संधि तथा सीटीबीटी पर हस्ताक्षर किये बगैर भी उसे परमाणु तकनीकी और परमाणु इंधन प्राप्त हो रहे हैं।[9].

वर्ष 2005 में सुदूरवर्ती पड़ोसी नीति के अंतर्गत दक्षिण–पूर्व एशिया एवं पश्चिम एशिया के साथ संबंध बनाने पर बल दिया गया। इसी वर्ष "पश्चिम की ओर देखो नीति" अपनाई गई। वर्ष 2008 में अमेरिका–भारत के मध्य के परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर होकर लागू होने के साथ ही भारत का परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह के साथ परमाणु व्यापार एवं सहयोग की अनुमति मिलने के कारण कई अन्य परमाणु आपूर्तिकर्ता देशों के साथ समझौते संपन्न हुए। भारत के साथ सामरिक परमाणु समझोते– जर्मनी, रूस, यूरोपियन यूनियन, जापान, दक्षिण कोरिया, अफगानिस्तान, फ्रांस, ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका के साथ हुए है। वर्ष 2008 के बाद विश्व में व्याप्त आर्थिक मंदी से भारतीय अर्थव्यवस्था और विदेश नीति प्रभावित हुई। भारत ने इस बिंदु पर बल दिया कि विश्व अर्थव्यवस्था के प्रबंध में विकासशील देशों की भूमिका में वृद्धि होनी चाहिए। वर्ष 2010 में सुरक्षा परिषद के सभी पांचों स्थायी सदस्यों के राष्ट्राध्यक्षों ने भारत की यात्रा की जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की यात्रा अत्यधिक उल्लेखनीय है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता हेतु भारत का समर्थन किया और कहा कि भारत एक महाशक्ति के रूप में उभर चुका है।[10].

भारत का वर्ष 2012 में संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद, मानवाधिकार परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद में भारत का सदस्य के रूप में निर्वाचित होना तथा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी का नियुक्त होना प्रमुख रहा। भारत–आसियान के मध्य दिसंबर, 2012 में नई दिल्ली में आयोजित भारत–आसियान स्मारक शिखर सम्मेलन में कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। तेहरान में 2012 में आयोजित नाम के 16वें शिखर सम्मेलन में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व व में प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य के रूप में 2012 में भारत ने सीरिया, दक्षिणी सूडान, सोमालिया और फिलिस्तीन में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एवं जलदस्युओं के खिलाफ सैन्य कार्रवाई व शांति सेना के रूप में मदद तथा जलवायु परिवर्तन के मुद्दों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही विवादों का शांतिपूर्ण समाधान और सेना का अंतिम विकल्प के रूप में प्रयोग करने, अपनी संप्रभुता की रक्षा, अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के उद्देश्य को मध्यनजर रखते हुए अपनी विदेश नीति को आगे बढ़ाया। इनके कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति के रूप में पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण संबंधों को कायम रखने पर जोर दिया गया। [11].

तृतीय चरणः श्री नरेंद्र मोदी सरकार की भारतीय विदेश नीति (2014 से वर्तमान तक)

वर्ष 1996 से मई, 2014 तक संघ में गठबंधन सरकारों का निर्माण हुआ, जिससे विदेश नीति के निर्माण में क्षेत्रीय दलों की भूमिका प्राथमिक हो गई। गठबंधन सरकार में सहयोगी दलों के दबाव के कारण सरकार द्वारा त्वरित निर्णय नहीं लिए जा सके और गठबंधन सहयोगियों द्वारा कई विदेशी समझौतों और मुद्दों का विरोध किया गया तथा सरकार की आर्थिक नीतियाँ अत्यधिक ढुलमुल बन गई। 16वें लोकसभा चुनाव (मई, 2014) में पहली बार वर्ष 1984 के बाद केंद्र में किसी एक दल के नेतृत्व में सरकार का निर्माण हुआ और पहली बार भारतीय जनता पार्टी को लोकसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ जिसका प्रभाव विदेश नीति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। 16वीं तथा 17वीं लोकसभा में भाजपा के पूर्ण बहुमत के कारण श्री नरेंद्र मोदी का एक लोकप्रिय और शक्तिशाली प्रधानमंत्री के रूप में भारतीय विदेश नीति को नेतृत्व मिला। 21वीं शताब्दी में श्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति में परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देता है। 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति के निर्णय शीघ्रता से लिए जा रहे हैं तथा विदेश नीति का स्वरूप स्पष्ट, आक्रामक और शक्तिशाली दिखाई पड़ता है इसी कारण से वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत एक उभरती हुई महाशक्ति तथा शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आया है। भारतीय विदेश नीति के आक्रामक और शक्तिशाली होने का श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व को जाता है। श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भारत सरकार की विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है–

- **पहले पड़ोस की नीति** – पहली बार किसी भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा अपने शपथ ग्रहण समारोह में दक्षेस के सभी सदस्यों को आमंत्रित किया गया। प्रधानमंत्री की पहली विदेश यात्रा भारत के सबसे छोटे पड़ोसी देश भूटान के लिए निर्धारित की गई। प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा अपने कार्यकाल के पहले ही वर्ष में नेपाल, श्रीलंका एवं बांग्लादेश की यात्राएं की गई और बांग्लादेश के साथ अत्यधिक महत्वपूर्ण सीमा समझौता (अन्तः क्षेत्रों के लेन–देन का समझौता) किया गया, जो वर्ष 1974 से लंबित था। वर्ष 1996 में गुजराल सिद्धांत द्वारा निर्मित इस नीति को प्रभावी रूप से लागू करने का प्रयत्न वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया है।[12]
- **एक्ट ईस्ट पॉलिसीः** 'पूर्व की ओर देखो' की नीति भारत के द्वारा वर्ष 1992 में अपनाई गई, परंतु इसके व्यावहारिक क्रियान्वयन में अनेक प्रकार की बाधाएं बनी हुई है इसलिए आधारभूत संरचना के बेहतर विकास के द्वारा आसियान देशों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने पर बल दिया जा रहा है तथा दक्षिण कोरिया और जापान जैसे पूर्व में स्थित देशों के साथ संबंधों को बेहतर करने की रण नीति अपनाई जा रही है। इसलिए 'लुक ईस्ट पॉलिसी' की जगह 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' की जरूरत पर जोर दिया जा रहा है। इसी संदर्भ में भारत के 69वें गणतंत्र दिवस (26 जनवरी, 2018) के अवसर पर आयोजित गणतंत्र दिवस परेड समारोह में आसियान के 10 देशों के राष्ट्र प्रमुखों और शासनाध्यक्षों ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। यह आसियान देशों के साथ भारत के गहरे होते संबंधों और भारत के प्रभाव के महत्व को दर्शाता है। [13]
- **आर्थिक विकासः** भारत को विनिर्माण का केंद्र बनाने के लिए भारत सरकार के द्वारा 'मेक इन इंडिया' का नारा दिया गया तथा भारत को विश्व के निवेश केंद्र के विकासित करने का प्रयत्न किया गया है। जापान, चीन, रूस, अमेरिका से भी भारी निवेश आकर्षित करने की योजना बनाई गई है तथा भारत को व्यापार के लिए सरल और सुविधाजनक देश के रूप में निर्मित किया जा रहा है और वर्तमान में भारत में निवेश के लिए एक विकल्प का स्थान माना जा रह है। भारत का तेजी से आर्थिक विकास करने के लिए नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा 'डिजिटल इंडिया', स्मार्ट सिटी, जैसी योजनाओं के द्वारा उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति के रूप में खाका पेश किया गया है। हाल ही में कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के समय देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए आर्थिक घोषणाओं के साथ 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की 12 मई, 2020 को शुरुआत की गई है जो भारत का आर्थिक क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है।
- **सांस्कृतिक कूटनीतिः** सांस्कृतिक कूटनीति पहले भी अपनाई गई थीं परंतु इसका प्रभावी प्रयोग वर्तमान सरकार के द्वारा किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जापान की यात्रा के लिए क्योटो शहर का चुनाव किया और वाराणसी तथा क्योटो के बीच बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक सुंबंधों पर बल दिया। प्रधानमंत्री द्वारा म्यानमार यात्रा के दौरान भी सांस्कृतिक संबंधों के द्वारा आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ किया गया। भारत द्वारा पहली बार योग दिवस का सार्वजनिक आयोजन किया गया और समूचे विश्व में योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित हुए जो भारत के सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में सहायक है। भारत सरकार की पहल पर 11 दिसंबर, 2014 को 'संयुक्त राष्ट्र महासभा' के 69वें सत्र के दौरान एक प्रस्ताव पारित करके 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस/विश्व योग दिवस के :प में मनाए जाने के लिए मान्यता दी गई।
- **प्रवासी (डायस्पोरा) को जोड़ने पर बलः** वर्तमान सरकार की विदेश नीति में गुणात्मक परिवर्तन नहीं है बल्कि परिवर्तन शैली का ज्यादा है। वर्तमान सरकार के द्वारा पहली बार सीधे डायस्पोरा से भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करन का प्रयत्न किया गया। प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका, यू.के., ऑस्ट्रलिया तथा अरब देशों की यात्रा के दौरान भारतीय मूल के लोगों के लिए सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। डायस्पोरा के साथ बेहतर संबंध भारत के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम को सफल बना सकते हैं तथा भारत में बड़ी मात्रा में इनके निवेश को आकर्षित किया जा सकता है।[14]
- **अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षाः** वर्तमान में भारत सरकार की विदेश नीति का मुख्य और प्राथमिक उद्देश्य अपने 'राष्ट्रीय

हितों' की रक्षा करना एवं परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर नजर रखना, जिससे कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ कदम से कदम मिलाकर चला जा सके। आतंकवद के खिलाफ वैश्विक अभियान को सहयोग व समर्थन देना, सीमापार आतंकवाद को समाप्त करना तथा पाकिस्तान में कार्यरत आतंकवादी ढांचे को समाप्त करना जैसे कठोर कदम हाल ही में भारत द्वारा उठाये गये है जैसे– वर्ष 2016 में उरी आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक, वर्ष 2016 में पुलवामा हमले के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक, वर्ष 2017 में डोकलाम में भारत की चीन के खिलाफ कार्रवाई, तथा हाल ही में लद्दाख में चीन के खिलाफ कार्रवाई भारतीय विदेश नीति के आक्रामक और सख्त होने के प्रमुख उदाहरण हैं। हाल ही में चीनी सामान का बहिष्कार तथा स्वदेशी अपनाने पर जोर, संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी सदस्यता के लिए अधिकांश देशों का समर्थन हासिल करना, अमेरिका, रूस, फ्रांस तथा अन्य देशों के साथ रक्षा समझौते करना, वन नेशनल वन पेंशन योजना, सैन्य एकीकरण करते हुए ''चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ,'' की स्थापना, जम्मू और कश्मीर से अनुच्छेद 370 को समाप्त करके संपूर्ण भारत में एक विधान, एक संविधान तथा एक राष्ट्रीय झंडा के सपने को साकार करना, जैसे अनेक महत्वपूर्ण फैसले लेना और कठोर आर्थिक व दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ नीतिगत फैसलों के निर्णय लेकर क्रियान्वित करना नरेंद्र मोदी सरकार की विदेश नीति की सुदृढ़, मजबूत, सशक्त और आक्रामक विदेश नीति को दर्शाता है।

- **अन्यः** नरेंद्र मोदी सरकार की सशक्त और मजबूत भारतीय विदेश नीति का ही परिणाम है कि विश्व के चार मुस्लिम देशों सहित अनेक देशों के सर्वोच्च सम्मान तथा पुरस्कारों से उनको सम्मानित किया गया है। विश्व के सबसे शक्तिशाली प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता और उत्कृष्ट व्यक्तित्व के कारण बहरीन, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, अफगानिस्तान, मालदीव, फिलिस्तीन, दक्षिण कोरिया, रूस आदि देशों ने अपने सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया है। प्रधानमंत्री मोदी की कुशल विदेश नीति के कारण उन्हें पर्यावरण के क्षेत्र में योगदान को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अपने सर्वोच्च सम्मान ''चैंपियन ऑफ द अर्थ'' से नवाजा गया है। बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा उन्हें ''ग्लोबल गोलकीपर्स अवॉर्ड'' से सम्मानित किया गया है। [15].

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि 21वीं शताब्दी में बदले वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति में काफी परिवर्तन हुआ है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के अंतिम कार्यकाल से लेकर डॉ. मनमोहन सिंह तथा वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तक भारत की विदेश नीति काफी परिवर्तन के दौर से गुजरी है। वर्तमान भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा करते हुए बेझिझक निर्णय लेती है तथा विश्व पटल पर भारत एक आर्थिक और सैन्य दृष्टि से भी उभरती हुई महाशक्ति के रूप में दिखाई पड़ता है। वर्तमान में वैश्विक संदर्भ में कोई भी निर्णय हो तो उसमें भारत अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वर्तमान में भारत विदेश नीति के संबंध में महत्वपूर्ण कठोर निर्णय लेने में काई संकोच नहीं करता है। चाहे परमाणु परीक्षण करना हो या आतंकवाद के खिलाफ सीमापार जाकर सैन्य कार्रवाई करना हो या फिर जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति करना हो जैसे निर्णय यह सिद्ध करते हैं कि 21 वीं शताब्दी में भारत की विदेश नीति पहले से कहीं अधिक मजबूत व स्पष्ट, सुदृढ़ और सशक्त तथा परिवर्तन की ओर अग्रसर विदेश नीति दिखाई पड़ती है।

संदर्भ

1. जैन, बी.एम.ः अंतर्राष्ट्रीय संबंध, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2013, पृ. सं. 249
2. सिंघल, एस.पी.ः अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, शालीमार पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी, 1986, पृ.सं. 110
3. खन्ना, वी.एन., अरोड़ा, लीपाक्षी, कुमार, लैस्लीः भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. नोएडा, पांचवां संस्करण, 2019 पृ.सं. 8
4. लक्ष्मीकांत, एम.ः भारत की राजव्यवस्था, मेक्ग्रा हाइ एजुकेशन (इंडिया) प्रा. लि., 2015, पृ.सं. 70.1–70.3
5. लक्ष्मीकांत, एम.ः उपर्युक्त पृ.सं. 70.4
6. मिश्रा, राजेशः राजनीति विज्ञान एक समग्र अध्ययन, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्रा.लि., हैदराबाद, 2020, पृ. सं. 384
7. वार्षिक रिपोर्टः 2000–2001, विदेश मंत्रालय भारत सरकार, पृ.सं. 9–10
8. वार्षिक रिपोर्टः 2003–2004, विदेश मंत्रालय भारत सरकार, पृ.सं. 4–9
9. मिश्रा, राजेशः उपर्युक्त पृ.सं. 384
10. मिश्रा, राजेशः उपर्युक्त पृ.सं. 385
11. वार्षिक रिपोर्टः 2012–2013, प्रस्तावना और सारांश, विदेश मंत्रालय भारत सरकार , पृ.सं. 3, 10, 11
12. मिश्रा, राजेशः उपर्युक्त पृ.सं. 386
13. एचटीटीपीएसध्ध्डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू. डीडीन्यूज. जीओवी. इनः 26 जनवरी, 2018
14. मिश्रा, राजेशः उपर्युक्त पृ.सं. 386–387
15. न्यूज18 हिंदीः 25 सितंबर, 2019